भाग्योदय, धन और सुख सुविधाओं के योग

महाभाग्य योगः–

महाभाग्य योग दो प्रकार से बनता हैः–

- यदि किसी स्त्री का जन्म रात्रि में हो सूर्यास्त के बाद और सूर्योदय से पूर्व तथा जन्म लग्न सूर्य और चंद्रमा सम राशियों में हो जैसे वृष कर्क कन्या वृश्चिक मकर और मीन इनमें से किसी राशियों में हो तो यह महा भाग्य योग होता है।
- पुरुष का जन्म दिन के समय हो अर्थात सूर्योदय के पश्चात तथा सूर्यास्त से पूर्व और जन्म लग्न सूर्य और चंद्रमा विषम राशियों में स्थित हो जैसे मेष मिथुन सिंह तुला धनु कुंभ आदि में से हो तो यह महा भाग्य योग बनता है।

➢ महा भाग्य योग में जन्मा व्यक्ति बहुत लोकप्रिय होता है और धन्य धान्य से युक्त होता है बहुत प्रसिद्ध होता है वह राजा के समान अधिकार प्राप्त होता है लंबी आयु जीता है अच्छे चरित्र का होता है सभी सुख सुविधाओं को प्राप्त करता है तथा बहुत भाग्यशाली होता है।

.....

- यदि भाग्येश व द्वादशेश का योग द्वादश भाव या नवम भाव में हो तो विदेश में भाग्योदय होता हैं।
- यदि इनका सम्बन्ध चतुर्थ भाव या चतुर्थेश से हो तो विदेश में बसने का योग होता है।

- यदि चतुर्थेश और भाग्येश लग्न में एक साथ स्थित हो तो व्यक्ति सुख सुविधाओं से भरपूर व धनी जीवन जीता है।
- यदि बृहस्पति चतुर्थ भाव में स्थित हो या चतुर्थेश को देखता हो और चतुर्थेश व बृहस्पति केंद्र या त्रिकोण में एक साथ स्थित हो तो बहुत प्रकार की संपन्नता प्रसन्नता सुख सुविधाएं आदि प्राप्त होती है।
- चतुर्थेश शुक्र यदि चतुर्थ भाव में स्थित हो जो व्यक्ति को वाहन की प्राप्ति होती है
- यदि कर्क लग्न हो और बुद्ध तथा शुक्र तुला राशि में स्थित हो तो व्यक्ति को अनेक सुख सुविधाएं बुद्ध की महादशा तथा शुक्र की अन्तर्दशा में प्राप्त होती है। यहां बुद्ध द्वादशेश होता है तथा शुक्र चतुर्थेश व लाभेश होता है अतः इनका चतुर्थ भाव में सम्बन्ध अनेक सुख सुविधायें प्रदान करता है।
- यदि चतुर्थ भाव के स्वामी और नवम भाव के स्वामी में परिवर्तन योग हो, चतुर्थेश और एकादशेश में परिवर्तन हो, लग्नेश और चतुर्थेश में हो, चतुर्थेश और पंचमेश में, पंचमेश और नवमेश में, या

पंचमेश और एकादशेश में परिवर्तन योग हो तो बहुत सारी सुख सुविधाएं व्यक्ति को प्राप्त होती है।

- इसी प्रकार से लग्नेश और भाग्येश में परिवर्तन योग हो तो व्यक्ति को सुख सुविधाएं प्राप्त होती है।
- यदि पंचमेश भाग्य स्थान में हो और भाग्येश दशम स्थान में हो तो बहुत सी सुख सुविधाएं प्राप्त होती है।
- यदि पंचम स्थान में शुक्र की राशि हो और शुक्र पंचम में ही हो तथा एकादश भाव में मंगल हो तो व्यक्ति धनी होता है।
- 1. यह स्थिति मकर लग्न व मिथुन लग्न में बनती है। मकर लग्न के अनुसार शुक्र पंचमेश (त्रिकोणेश) व दशमेश (केन्द्रेश) होता है। मंगल चतुर्थेश व लाभेश होता है। अपनी राशि में स्थित होकर इनका दृष्टि सम्बन्ध धन व सुख सुविधायें देगा ही।
- 2. इसी प्रकार मिथुन लग्न में शुक्र पंचमेश (केन्द्रेश) व द्वादशेश होता है। द्वादशेश शुक्र सुख सुविधाओं के लिए अच्छा होता है। मंगल षष्ठेश व लाभेश होता है जिसकी मूल त्रिकोण राशि लाभ भाव में होती है। अपनी राशि में स्थित ये शुक्र व मंगल धन व सुख सुविधायें प्रदान करते हैं।
- यदि पंचम स्थान में बुध अपनी राशि में स्थित हो और एकादश भाव में चंद्रमा मंगल और गुरु स्थित हो तो व्यक्ति बहुत अधिक धनी होता है।
- 1. यह स्थिति कुम्भ लग्न व वृष लग्न में बनती है। कुम्भ लग्न में बुध पंचमेश व अष्टमेश बनता है। एकादश में षष्ठेश चन्द्रमा, तृतीयेश और दशमेश मंगल, लाभेश और धनेश गुरू स्थित होते हैं तो चन्द्र–मंगल (धन योग), चन्द्र–गुरू गजकेसरी योग बनता है। अतः धन व सुख सुविधायें प्राप्त होती है।
- 2. इसी प्रकार वृष लग्न में बुध धनेश व पंचमेश बनता है। चन्द्रमा तृतीयेश, मंगल व गुरू के साथ चन्द्र–मंगल योग तथा गजकेसरी योग बनाता है। अतः धन व सुख सुविधायें प्राप्त होती है।

इन योगों में तृतीयेश (पराक्रम भावेश) एकादश भाव में है जो अन्य ग्रहों से योग करता है। सुख सुविधायें व धन प्राप्ति में पराक्रम का विशेष योगदान है।

- यदि पंचम भाव में सिंह राशि हो और सूर्य पंचम भाव में ही स्थित हो तथा एकादश भाव में शनि चंद्र तथा वृहस्पति हो तो व्यक्ति बहुत धनी होता है।
- 1. यह स्थिति मेष लग्न में बनती है। सूर्य पंचमेश होकर पंचम भाव में स्थित होता है। एकादश भाव में दशमेश–एकादशेश शनि, चतुर्थेश चन्द्रमा तथा भाग्येश–द्वादशेश गुरू से सम्बन्ध करता है जो धन व सुख सुविधायें प्रदान करता है।
- पंचम भाव में अपनी राशि में यदि शनि स्थित हो तथा लाभ भाव में सूर्य और चंद्रमा स्थित हो तो व्यक्ति बहुत धनी होता है।

- 1. यह स्थिति कन्या व तुला लग्न में बनती है। कन्या लग्न में शनि पंचमेश–षष्ठेश होकर पंचम भाव में स्थित होता है। लाभ भाव में स्वराशिस्थ चन्द्रमा द्वादशेश सूर्य के साथ शनि से दृष्टि सम्बन्ध बनाकर धनदायक व सुख सुविधाओं का प्रदाता है।
- 2. तुला लग्न में शनि चतुर्थेश–पंचमेश (केन्द्रेश–त्रिकोणेश) होकर दशमेश चन्द्रमा व एकादशेश सूर्य से दृष्ट होकर धन व सुख सुविधायें प्रदान करता है।

- **यदि वृहस्पति पंचम भाव में अपनी राशि में स्थित हो तथा लाभ भाव में बुध स्थित हो तो व्यक्ति बहुत धनी होता है।**

- 1. यह स्थिति सिंह व वृश्चिक लग्न में बनती है। सिंह लग्न में बृहस्पति पंचमेश व अष्टमेश होता है। मूल त्रिकोण राशि पंचम भाव में है। बुध लाभेश–धनेश होकर अपनी राशि में एकादश भाव में होकर बृहस्पति से दृष्टि सम्बन्ध कर अतीव धनदायक होता है।

- 2. वृश्चिक लग्न में बृहस्पति धनेश–पंचमेश बनता है। कन्या राशि में एकादश भाव में बुध दृष्टि सम्बन्ध कर प्रचुर धनदायक होता है।
- **यदि पंचम भाव में मंगल अपनी राशि में स्थित हो तथा लाभ भाव में शुक्र स्थित हो तो व्यक्ति बहुत धनी होता है।**
- 1. यह स्थिति कर्क व धनु लग्न में बनती है। कर्क लग्न में मंगल पंचमेश–दशमेश होकर पंचम भाव में, शुक्र चतुर्थेश–एकादशेश होकर एकादश भाव में स्थित होकर मंगल से दृष्टि सम्बन्ध बनाकर प्रचुर मात्रा में धन व सुख सुविधायें प्रदान करता है।
- 2. धनु लग्न में मंगल पंचमेश–द्वादशेश होकर पंचम में स्थित होता है। द्वादशेश को अपनी इतर राशि (अर्थात् दूसरी राशि) का फल प्रदान करना होता है। शुक्र षष्ठेश–एकादशेश होकर एकादश भाव में स्थित होकर मंगल से दृष्टि सम्बन्ध करता है। यह अतीव धनदायक योग है।
- **यदि पंचम भाव में चंद्रमा अपनी राशि में स्थित हो तथा शनि लाभ भाव में स्थित हो तो व्यक्ति बहुत अधिक धनी होता है।**
- 1. यह स्थिति मीन लग्न में बनती है। चन्द्रमा पंचमेश होकर पंचम भाव में स्थित होता है। शनि एकादशेश–द्वादशेश होकर एकादश भाव में स्थित होकर चन्द्रमा से दृष्टि सम्बन्ध कर प्रचुर धनयोग बनाता है।
- **यदि सूर्य लग्न में सिंह राशि में स्थित हो और मंगल** व **वृहस्पति से दृष्ट हो तो व्यक्ति बहुत धनी व संपत्तिशाली होता है।**
- 1. यहां मंगल चतुर्थेश–भाग्येश होकर व बृहस्पति पंचमेश–अष्टमेश होकर सूर्य पर दृष्टि डालते हैं। बृहस्पति की मूल त्रिकोण राशि पंचम भाव में है। यह प्रचुर धन सम्पत्ति का योग है।
- **यदि कर्क लग्न में चंद्रमा बुद्ध वह वृहस्पति के साथ स्थित हो या इनसे दृष्ट हो हो व्यक्ति बहुत धनवान होता है।**

- 1. कर्क लग्न में बुद्ध द्वादशेश–तृतीयेश तथा बृहस्पति षष्ठेश–भाग्येश होता है। यहां उच्च राशिस्थ बृहस्पति लग्न में स्थित होकर गजकेसरी योग बनाता है तथा तीन भावों यथा पंचम, सप्तम व नवम पर अपनी शुभ दृष्टि डालता है। इस प्रकार से चन्द्र, बुद्ध जो मन व बुद्धि के कारक हैं तथा बृहस्पति धनकारक होने से प्रचुर धनी होने का योग बनाते हैं।
- **यदि जन्म लग्न में मंगल अपनी राशि में बुद्ध शुक्र और शनि के साथ स्थिति हो या इनसे दृष्ट हो तो व्यक्ति धनवान होता है।**
- 1. यह स्थिति मेष व वृश्चिक लग्न में बनती है। मेष लग्न में बुद्ध तृतीयेश–षष्ठेश, शुक्र द्वितीयेश–सप्तमेश, तथा शनि दशमेश–एकादशेश होता है। शनि का मंगल के साथ नीचभंग हो जाता है। इन भावेशों का लग्न में इकट्ठा होना धनदायक होता है।
- 2. वृश्चिक लग्न में बुध अष्टमेश–एकादशेश होता है (जिसकी मूल त्रिकोण राशि एकादश भाव में है), शुक्र सप्तमेश–द्वादशेश (जो भोग्यकारक होता है) तथा शनि तृतीयेश–चतु
  र्थेश होकर लग्न में युति करते हों तो यह योग धनप्रदायक है।
- **बुद्ध जन्म लग्न में अपनी राशि में** शनि **और बृहस्पति के साथ** स्थित **हो या इनसे दृष्ट हो जो व्यक्ति धनवान होता है।**
- 1. यह स्थिति मिथुन व कन्या लग्न में बनती है। मिथुन लग्न में शनि अष्टमेश–भाग्येश होता है (जिसकी मूल त्रिकोण राशि भाग्य भाव में होती है।) बृहस्पति सप्तमेश–दशमेश होता है। ये लग्न में बुध से युति कर धनयोग बनाते हैं।
- 2. कन्या लग्न में शनि पंचमेश–षष्ठेश होता है। बृहस्पति चतुर्थेश–सप्तमेश होता है। लग्न में युति कर धनयोग बनाते हैं। यह केन्द्रेश–त्रिकोणेश सम्बन्ध है।
- **वृहस्पति अपनी राशि में लग्न में बुद्ध और मंगल के साथ स्थित हो या इनसे दृष्ट हो तो व्यक्ति धनवान होता है।**
- 1. यह स्थिति धनु व मीन लग्न में बनती है। धनु लग्न में बुध सप्तमेश–दशमेश होता है। मंगल पंचमेश–द्वादशेश होता है। बृहस्पति के साथ सम्बन्ध केन्द्र त्रिकोण सम्बन्ध होता है जो धन सम्पत्ति प्रदान करता है।
- 2. मीन लग्न में बुध चतुर्थेश–सप्तमेश होता है। मंगल द्वितीयेश–नवमेश होता है। बृहस्पति से इनका सम्बन्ध केन्द्र त्रिकोण सम्बन्ध होता है जो प्रचुर मात्रा में धन प्रदान करता है।
- **शुक्र अपनी राशि में लग्न में शनि और बुध के साथ स्थित हो या इनसे दृष्ट हो तो व्यक्ति धनवान होता है।**
- 1. यह स्थिति वृष तथा तुला लग्न में बनती हैं। वृष लग्न में शनि भाग्येश–कर्मेश होता है। बुध धनेश–पंचमेश होता है। शुक्र के साथ इनका सम्बन्ध केन्द्र त्रिकोण सम्बन्ध है जो अतीव धनदायक है।
- 2. तुला लग्न में शनि चतुर्थेश–पंचमेश होता है। बुध नवमेश–द्वादशेश होता है। शुक्र के साथ इनका सम्बन्ध केन्द्र त्रिकोण सम्बन्ध है जो अतीव धनदायक है।

- **जन्म लग्न में शनि यदि अपनी राशि में मंगल और वृहस्पति के साथ स्थित हो या इन से दृष्ट हो तो जातक धनी होता है।**
- 1. यह स्थिति मकर व कुम्भ लग्न में बनती है। मकर लग्न में मंगल चतुर्थेश–एकादशेश बनता है। बृहस्पति तृतीयेश–द्वादशेश बनता है। यहां बृहस्पति का नीचभंग बनता है तथा मंगल उच्च राशि का होता है। यह योग धनदायक है।
- 2. कुम्भ लग्न में मंगल तृतीयेश–दशमेश बनता है। बृहस्पति द्वितीयेश–एकादशेश बनता है। यहां बृहस्पति धनेश–लाभेश तथा धनकारक होने से, मंगल पराक्रमेश–कर्मेश होने से शनि के साथ इनका सम्बन्ध अतीव धनदायक है।

- **पंचमेश तथा नवमेश की युति या परस्पर दृष्टि व्यक्ति को धनी बनाती है**
- **केंद्रेश वह त्रिकोणेश की युति या दृष्टि जातक को धनी बनाती है**